मनक हाट

मनक हाट

डॉ. शिव कुमार प्रसाद

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

ISBN :

Published by : Pallavi Parkashan
Tulsi Bhawan, J.L.Nehru Marg, Ward No. 06, Nirmali, District- Supaul, Bihar : 847452
website : http://pallavipublication.blogspot.com
e-mail : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
Mobile : 8539043668, 9931654742

Price 175/-
Copyright © Author
First published 2021

Typeset and Printed By : Manav Arts, Nirmali (Supaul). Pin : 847452

MANAK HAT
Anthology of Maithili Poems by Dr. Sheo Kumar Prasad

All rights reserved. No Part of this publication may be reproductd or transmitted, in any form or by any means, without prior permission of the author.

समर्पित अछि ई पोथी श्रद्धेय बड़का बाबू, छोटकाबाबू, ननुकक्का, छोटका काका, बुढ़िया माए, माए, लवकी काकी, बड़की भौजी, लालभौजी आ सुकदेव भैयाकेँ... जनिक सिनेह आब करवनो नहि, कतहु नहि, कहियो नहि...।

अहीं सबहक सिखाओल बोलक सम्पैतसँ आइ हम एहि पोथीकेँ पूरा कएल।

तँए ई पोथी अहीं सबहक लेल

विमल

(शिव कुमार प्रसाद)

पोथीक मादे

एहि संग्रहमे नहुँ-नहुँ सुनगल विविध भावकेँ हम शब्दरूप देबाक प्रयास केलहुँ अछि। अनेक काव्यगोष्ठी आ मुख पोथीपर देल लगभग तीन-चारि बर्खक भावान्तरक ई कविता संग्रह थिक।

भाव किनकहुँ मरौसी नहि तँए जखन जे 'सोंहाँत वा अनसोंहाँत' लागल, लिखैत गेलहुँ। मोटा-मोटी बरख भरिसँ टंकित ई रचना सभ पलखैतक कारणें प्रकाशनक बाटपर रहितो बिलमल छल।

एहि संग्रहमे किछु चरिपतिया सेहो छेलइ। ओकर फराक संग्रह बनेबाक इच्छाक कारणें किछु नव-पुरान रचना दऽ प्रस्तुत संग्रहकेँ पूर्ण कएल।

संग्रह नीक कि अधला आकि तीत कि मीठ जेहेन हो, आह-वाह वा आह-वाहक संस्कृतिसँ फराक समीक्षाक आकांक्षी अछि।

-डॉ. शिव कुमार प्रसाद

निर्मली

31 जनवरी 2018

आभार

अदखै-बदखैसँ लऽ कऽ शुभकामनाकांक्षी समस्त इष्ट-मित्रक आभारी छी, जिनकर चोट आ शुभेच्छाक कारणें ई संग्रह प्रकाशित भऽ रहल अछि।

'सगर राति दीप जरय'क अनेक वरिष्ठ-कनिष्ठ समीक्षक आ रचनाकारक प्रोत्साहनक स्मरण करैत हुनका सबहक प्रति आभार प्रकट करैत छी।

अपन अग्रज द्वय श्रीयुत् महावीर प्रसाद एवम् सुखदेव प्रसादकेँ सादर स्मरण करैत छी जिनकर सदैत प्रोत्साहन, सिनेह आ आशीष भेट रहल अछि।

एहि अवसरपर श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ स्मरण कोना नहि करबनि, हुनकर प्रोत्साहन सदैत मैथिली भाषामे रचना करबा लेल हमर प्रेरणा श्रोतक काज कऽ रहल अछि।

एहि पोथीक प्रकाशनक क्रममे सभसँ अधिक सिनेही उमेश मण्डल, हुनक धर्म पत्नी पुनम मण्डल संगे पल्लो, लल्ला आ मानव केर संग भेटल अछि। समस्त परिवारकेँ बहुत-बहुत सिनेह आ आशीष।

शिव कुमार

काव्य-क्रम

मनुख 15
शीर्षक
मनक हाट
शीर्षक
ऋतुराज
काजर
सुखसंबल
शीर्षक
करमकबाट
अनुतरित प्रश्न
बितैत भिनसर
चनरमा नहि बनिहेँ
मन
सम्बन्ध
तोड़ि ले सिनेह
शीर्षक
व्यथा
जिनगीक साँस
खगता
शीर्षक

उपराग

शीर्षक

जिनगी

ओझरी

हम

शीर्षक

टाइम कहाँ छै!

शीर्षक

शीर्षक

शीर्षक

शीर्षक

शीर्षक

शीर्षक

शीर्षक

शीर्षक

वाह जिनगी

शीर्षक

शीर्षक

शीर्षक

कतेक सुख छै

शीर्षक

देखि छगुन्ता लागै

प्रतीक्षा

शीर्षक

शीर्षक

शीर्षक

शीर्षक

मोह

शीर्षक

कहाँ पढ़ल भेल

प्रेमक बाट

तोरे सन गाम

शीर्षक

शीर्षक

मोनक बात

एहन गलती किएक करै छी?

शीर्षक

बरखा

धृतराष्ट्र

बरषा

शीर्षक

शीर्षक

शीर्षक

दुलार

सिनेहक रोटी

मोन अछि?

गीत

अहूँ अगुता गेलहुँ!

शीर्षक

पद्मक पराग

अणु

हमर बाबूजी

नहि किछु लागै नीक

खेरहा

शीर्षक

शीर्षक

बरक गाछ (वटवृक्ष)

पर्यावरण-सुरक्षा

की राखल छै

आब की करी

शीर्षक

मन जखन भीजै छै

केहन छी कोना छी!

शीर्षक

अपन डीह

अहीं संग

फाँस

सुख-दुख

बिडम्बना

मरतै गरीबहे

करोना काल

करोना काल

प्राकृत

सत्ता

कविता

करोना काल

करोना काल

दुमासा

सरिपहुँ सभ भसिआएल जाइ छी

शीर्षक

जूड़शीतल

काँपैत मन

सोन सन दिन

आश

करोना काल

राजनीतिक साँप

साँच

विधना की करत!

करमक बाट

झुझुआन जिनगी

शीर्षक

कतेक पैघ?

बिहान

वेलेंटाइन

वेलेंटाइन- 2

चुप छी

सिनेह

बसंती भोर

लिलसा

नाक

मनुख

हम लिखैत रहलहुँ
अपनहि व्यथाक कथा
धार बहैत रहल
फूल हँसैत रहल
सुरुज उगैत रहल
किरीन लुटवैत रहल
वात बहैत छै सदैत
कहियो कहलकै किछो!
गाछ रौद, पानि, पाथर सहैत छै मुदा
फूल फल छाहसँ
ककरो मनाही केलकै।
अपन नेनाक दूध गाय
दोसरकेँ बँटैत
ता जिनगी खुट्टासँ
खुटेसल रहैत
दूध देबासँ कहियो
केकरो मना केलकै!
मनुख छै मुदा
सभसँ मतलबी
अपना छोरि अनकासँ
कोनो मतलब रहलै? ❑ 9 मार्च 2021

शीर्षक

सहज सोहावन अति मनभावन
आओल सुखकर मास
कोइली कुहकै मज्जर हुलसै
बीतल ठिठुरैत मास।
मधुमाछीकेर सेना धाऔल
चहुँदिस पुहपक ओर
सगरो छै ऋतुराजक शोभा
अनुपम फागुन मास।
अमल धवल गगनकेर आँगन
मह मह गमकै फूल
मज्जरक भारसँ नत यौवना
गाछो भरल सुआश।
आँगन द्वार लगै लुभावन
जन जन गावै फाग
अलिगण गावै प्रेमक पांती
सुरभित बहै बतास। ❑

मनक हाट

मन मे समायल अछि सौरभ सबेर केर
अहाँ कहैत छी खिस्सा अबेर केर
साँझ होएत जिनगीक भरोस नहि करी
अन्हार छै राति तँ की इजोत नहि करी?
इजोत नहि करी।
असमंजस सँ व्याकुल वनकेर बाटमे
ठाढ़ जखन जिनगीक मनकेर हाटमे
छोटो-छिन लिलसाक
पूरब कठिन जखन, उपाय नहि करी?
अन्हार छै राति तँ इजोत नहि करी?
सपना बलु सपने रहौ
सपनाक की दोष, नीनोमे सुखक की
सांस नहि भरी?
अन्हार छै राति तँ इजोत नहि करी
बुझल अछि जिनगीमे
बहुत कुश-काँट छै
काँटसँ भरल रस्ताकेँ
साफ नहि करी?
अन्हार छै राति तँ इजोत नहि करी? ❑

शीर्षक

एताह बहुत एकभाषी
ओकालत करैत कलोल
हम छी ध्वजधारी
मैथिलीक मुँहजोर।

कहियो देखबै नीकसँ
कोरल जेतैक जौं नीब
उपरकाक फरफेंसी
बनेतै ओकरे मुँहचोर। ❑

ऋतुराज

सोलहो शृंगारमे
लागल छथि ऋतुराज
तीसिक नीलाभ संग
हँसैत छैक सरसों
गेना गुलाब मे
लागल छै बाजी
के कतेक रंगगर
के कतेक सुरेब
सौरभसँ सराबोर
पीत वसन धवल हास
गुलदाउदी लरजै छै
करैत जाइके उपहास।
हहा कऽ हँसैत छैक
जेना आमक गुज्जर
पल्लव बिनु पल्लवकेँ
छितरल छै मज्जर
कोइली ओहि दोघसँ
मारैत अछि हुलकी
डाढ़ि डाढ़ि करवनहु
मारैत छै दुलकी
प्रियाकेर खोज मे
शुरू भेलै कुहकी। ❑

काजर

कारी छै काजर तैयो
नेनक शृंगार छै
रौद रहै केहनो तैयो
दिनक शृंगार छै
रूप रहौ सुन्नर जौं
अन्तर रहौ कारी
मनुषक नजैर मे ओ
चनरमे सन उघार छै। ❑

सुखसंबल

सुन्दर सुन्दर नाम संग
भाव भरल मुखमंडल
आगा पाँछा डोलिरहल
तितलीक सुमंडल
लाल, पियर, कथ्थीक
संग करिया चितकाबर
घुमि लियऽ उड़ि लियऽ
जिनगीक सुखसंबल। ❑

शीर्षक

भिनसर हेतै कोना सुरुजकेँ बिना
चनरमासँ कहियोने भिनसर हेतै
बात कतबो बनाली सहज छै मुदा
साँच-साँचे रहत झूठ- झूठे रहतै।
अंग सुन्दर बहुत नाम सुन्दर बहुत
नाम सुन्दरे रहनेसँ किछु नहि हेतै
करमठेलक ठेलुआ बनबजँ अगर
जिनगी भरि के किनका ठेलैत रहतै। ❑

करमकबाट

हम भाथी तोहर तों हमर सांस छें
हम बासा तोहर तों हमर आस छें।
हम गंगा नहायब नहि पापे मरब
मन चंगा तऽ कियेक सरापे सड़ब
जखन करमे सँ जिनगी-जहान छै
तखन करमेक बाट कियेकने धरब। ❑

अनुतरित प्रश्न

एहिनो कहीं कोनो प्रोमिस होएछै
आइ बाजल काल्हि बिसैर जाए छै।
बाप अहुरिया काटि रहल छै
बेटा रोज किरदानी करैत छै।
बापक नुआँ चेफरी साटल
बाऊक रोज फुलेल लगै छै।
एना पहरुआ चकभौर दैत छै
चोर कोना तब चोएर करै छै।
इचना-पोठी तरा रहल अछि
रौह भाकुर टहलानी मारै छै। ❑

बितैत भिनसर

दुखक रेह तऽ बढ़ले जाएछै
लिखै छी से मेटाएले जाएछ
आँखीक काजर बड़ दुख दैये
अहिना जिनगी बितल जाएछै।
दुखक बाढ़िमे डूबैत भासैत
सदैत जिनकर आश केलहुँ
बर्षा बितलै फगुओ बिततै
ओ भेल छथि डुमरी फूल
रातिक सांस उखरले जाएछै
अहिना जिनगी बितल जाए छै। ❑

चनरमा नहि बनिहेँ

कहैत रहलियौ
जुनि बन चनरमा
तरेगण के कहियो
कहाँ कोइ गरसलकै
गरसल जाइ छै
सदैत चनरमे।
अपन ने आगि आकि
इजोते ने अपन रहतौ
राहु केतु सदैत कहाँ
चैनसँ जीबऽ देतौ
अपनहि इजोत आ अपने
ताप धारी बनि
तरेगन बनमे तऽ बनिहेँ
चनरमा नहि बनिहेँ। ❑

मन

मन आइ ठमकल अहि
बात ओ खठकल अहि
नहि अछि ठेकान कथुक
देह मन दहकल अछि।
कुंठा मे जिवैत सभ
फाटलके सिवैत सभ
अनचोके अनभ्यासहु
खुने घोंट पिबैत अहि। ❑

सम्बन्ध

सम्बन्धक पुरहर
आ पातिलकेँ बैठबैत घरी
उसारबाक कहाँ कोइ
राखैत अछि ध्यान।
दुनु मे भरि- भरि
भावक पेटारी
सिनेहिक रंगसँ
रंगैत पेनिक धान।
पिठार आ सेनुर सँ
हृदयकेर हर्षक
पावन धरित्री पर
अहिपन अभिराम।
सभटा सम्बन्धक
पुरहर आ पातिल
अन्तिम अवस्थामे
बैठाएले रहि जाइ छै। ❑

तोड़ि ले सिनेह

तोड़ि ले सिनेह आइ
नुनूक दुलार सँ
बहिनक मनुहार सँ
सखी बहिनपा
खढ- खड़िहानसँ
आँगन दलानसँ
चुलही- चिनवारसँ
माटि आ गोबरसँ
ढ़ौरल देवालसँ
काकीकेर छातीक
हहरैत सिरहानसँ
भौजक अखियासैत
ननैदक सनोमानसँ
भाइकेर दुलार फेर
बापक उदगारसँ
मायकेर फाटैत
छातीकेर भाथी
झहरैत मेघसन
आँखिक टघारसँ।
अदौसँ टूटैत रहलै
अहिना सिनेह सूत

बेटी जे भेलै ओकर
घर कहाँ बनलै
जनमसँ बापक घर
विवाह बाद वरक घर
बेटाक घर संगे
टाटीये पर जेतै।
लेबैत साटैत टाट जकाँ
जिनगी भरि जिनगी
अन्तो मे अन्तौए जकाँ
माटि मे मिल जेतै। ❑

शीर्षक

सभ चलै छै तँहु चल
सभ कहै छै तहुँ कह।
असगर तँ असगरे चल
रतिगर छै रतिगरे चल।
दिनक दोष जुनि तों देख
अपन दोष देखैत चल।
राग मिलौ तऽ गावैत चल
जोगा मिलौ तँ जागैत चल। ❑

व्यथा

हम कुचरैत छलहुँ
सभ कचरैत छलाह।
हम मरैत छलहुँ
सभ मारैत छलाह।
हम डुबैत छलहुँ
सभ डुमाबैत छलाह।
हम फुटैत छलहुँ
सभ फोरैत छलाह।
हम लोहछैत छलहुँ
सभ लोहछावैत छलाह।
हम जोड़ैत रही
सभ तोड़ैत छलाह। ❑

जिनगीक साँस

मान तों अभिमान तों
जिनगीक अभियान तों।
सुखक सुन्नर साँझ तों
जीवक जिवट प्राण तों।
राग तों विराग तों
हमर सुन्नर भाग्य तों।
अमल निर्मल नीर तों
मुक्ति दाता तीर तों।
आदि तों अनादि तों
गहन गह्वरित नाद तों
आश तों विश्वास तों
सभहक जिनगीक सांस तों। ❑

खगता

मनमे हुलास अछि
ढ़ौआक आश अछि
ढ़ौआक खगता मे
नेना उदास अछि।
डोले- डोल खगता
छैक सुखल इनार
सोहि करवन फुटतै
तकै छी रेघार
मीता भरोस देलैन
तही पर आश अछि
मनमे हुलास अछि। ❑

शीर्षक

हम की कही राति बीतल कोना
समदियाक रस्ता कोइ ताके जेना।
ओ सुतल तऽ बुझियौ राति भऽ गेलै
ओ जगलै तऽ सुरुज सिनुरिया गेलै
भोरे सँ हम कहैत रहि गेलहुँ
ओ चमकैत रहल बिजलोके जेना। ❑

उपराग

दुखैत नस पर आँगुर दऽ किएक ससैर गेलहुँ
दुख दऽकेँ अहाँ गेलहुँ हम की बिलटि गेलहुँ।
भरिदिन नाम रटैत रही से बिसरि अहाँ
तिलकोरक ललछोंह देख रंग अटकि गेलहुँ।
नित भोरे उठि सुरुज देव आब कहैत छथि
जुनि कखनहुँ अगुताइ सुनि हम सम्हैर गेलहुँ।
लिलसा केर सकबेधल मनुआँ बुझि गेलै
नहि रहब बनि दास दरद सभ बिसैर गेलहुँ।
किनकर के छैक अमर प्रेम कोइ कहता की
झुठे जग अपसियाँत रहैत अछि चीन्हि गेलहुँ। ❑

शीर्षक

कोनो समूह, कोनो व्यक्ति छथि
सभकेँ नमन करै छी हम
उतारा देब बहुत कठिन अछि
निमंत्रण नहि पुरा सकैछी हम।
हमर लचारी बुझबै तऽ सभ
जरूर हमरा माफ करबै
कनक कटोरी छोडि कोना देब
जाबत ओ मिलैत रहतै। ❑

जिनगी

नितहु खटिकऽ आबै छै तब
माल-जाल लेल कुट्टी काटी
नेना भुटका कोरा- कान्ह पर
लटैक कानि तब दरद सुनाबै
कखनहुँ कोरा कखनहुँ कनहा
चढ़ा- चढ़ा नेना फुसलाबै
यैह छै जिनगी जिनगीके सुख
अहिना भिनसर साँझ बिताबै। ❑

ओझरी

मन जखन ओझराएल रहत
ओझराएले सन बात उठत ।
राजक राज बुझलयै तऽ
हुनकर हँसी चौंक उठल।
सभ दिन सभकेँ बौसलहुँ हम
हमरा बेर सभ अकैड़ बैसल।
अनकर मनकेँ कोना कही
अपनहुँ मन नहि बाजि सकल।
लियऽ लोटिया हम डुमा देलहुँ
ई पोखरि के पखारि सकत। ❑

हम

बीतल बात भऽ जाएब हम
छूटल बाट भऽ जाएब हम।
कतेक छै दिन आब बाँचल
अन्हार राति भऽ जाएब हम ।
कुसुम सन दिन छलहुँ कहियो
सुखाएल फूल भऽ जाएब हम।
के जाए उजरल डीह देखैले
डीहक माटि भऽ जाएब हम।
लागल छै हाट जिनगी केर
उसरल हाट भऽ जाएब हम। ❑

शीर्षक

इन्होर इन्होर भेल छनि
मुँह आइ बौआ केर
गुरु जी पुछलकैन जखन
पोथिक नाम बौआकेँ।
विषय वस्तुक सूची तँ
दूरक कथा छनि
गुरुजीक दर्शन दुर्लभ छनि बौआकेँ।
नामो पता अनकेसँ
लिखवैत छथि फारम पर
सत्र साल विषय सेहो
अकथ छनि बौआकेँ। ❑

टाइम कहाँ छै!

पुरना बितौ कि नवका आबौ
देखबा सुनबाक टाइम कहाँ छै।
गाछसँ गिरलै कि बाट पर गिरलै
टांग मे चोट कि हाथ मे चोट छै,
एतबा बुझबाक टाइम कहाँ छै।
कका काल्हि समाद पठौलखिन्ह
कहिया चैल जाएब ठीक ने कोनो
भेंट कऽ जैतहुँ, टाइम कहाँ छै।
बाबूजीकेँ अपने जिद्द छनि
गाम छोड़ि जौं नहि औता तऽ
हमरा लग आब टाइम कहाँ छै।
खेत पथारी कऽ की हेतै
आम जौम मे की राखल छै
ई सभ देखवाक टाइम कहाँ छै। ❑

शीर्षक

भोर सभ दिन होएत छै
सुरुज संगे भिनसर सेहो
ओहिना सभहक जिनगीमे
भोर अबैत छै
भोरकेँ अँखियासि जे
श्रमिक श्रमकेँ अपनियाबैत
बाट चलैत छथि
हुनकहि श्रम समधानल
होएत छनि। ❑

शीर्षक

देखलहुँ सिंगार अहाँक
देखते रहि गेलहुँ
भरल पुरल देह लग
हम रेखते रहिगेलहुँ।
अमवस्याक अन्हरियाक
मजाल कि टिकत
कतबो केलहुँ उजास हम
भगजोगनिये रहि गेलहुँ। ❑

शीर्षक

गुलाबक एकटा छोट छिन
ठाढ़ि काटि रोपलहुँ
पानि देलयै,पुम्ही चललै
खुरपी सँ जड़ि कोरि
घास-पात साफ काएल
पुम्ही बढ़ि ठाढ़ि भेलै
आब ओहिमे लागल कोढ़ि
फूल बनि सभकेँ
सुख, सुगन्ध सँ
सुरभित केने छै।
एकटा बाछी किनलहुँ
पोषैत-पालैत साल भरीक बाद
ओ पाल खेलक
नहुँ नहुँ ओकर देहक
विकास भेलै।
आब ओ मातृत्वक गरिमासँ
गौरवान्वित हेती
अपन नेनाक संगे-संग
हमरहु आ हमर नेनाक
सेहो पोषती।
आइ ओ सन्तान केँ जनम देलीह।

पहिल दूधक धार हमरा
सभहक धात्री धरित्रीकेँ
समर्पित कए
लटपटाएत बुतरुकेँ भेटल।
अहिना घरमे नववधूक आगमन।
भाँति-भाँतिकेर शोभा-सरंजाम
गीत- नाद,गाजा-बाजासँ स्वागत
आनन्द- उछाह।
मुदा किछुए दिनक बाद
अपन आन होमय लागल
साउस,ननैद,दियर, भैंसुर
सभ जेना भार सन
कहुना सहैत सिहाएत
ओ आब माता भेली।
समस्त परिवारमे
आनन्द उछाह।
मुदा किछुए दिन!
बिदा भेली पतिक संग
सभहक नाता तोरि
नोकरी पर। ❑

शीर्षक

तों उधार माँगै छें हम उघार होएत छी
तोहर बेगरता संगे अपसियांत रहै छी।
तोहर मधुराएल बोल लगले करुआएल बोल
सुनि मोन पड़ैत अछि गाँमक देसी ललका ओल।
तों उमकैत रहै छें हम भीजैत रहै छी। ❑

शीर्षक

बहुत तामश चढ़ल अपनहि पर
देखिकऽ अपन खटराग
जिनका जे रुचनि पचनिसे
दै लिखथि पढ़थि अनुराग।
किनकहु रुचि आख्यानक तऽ
किनकहु गीत पद्यांश
किनकहु छंद, रस, अलंकार तऽ
किनकहु हास्य आ व्यंग्य।
फेर जनितहुँ मुँह फुलाए
हम किएक कतहु खौंझाए। ❑

शीर्षक

हम तऽ चललहुँ बहुत
सोचिकेँ गाँम सँ
राति शहरे मे भऽ गेलैतऽ हम की करी।
भोरक-भरोसे राति बीतैत
रहल
आशक भरोसे कतेक की करी।
कण कण जोरैत छलहुँ
रातिक अन्हार मे
ओ सुरुजक किरिण नइ एलै
की करी।
हम तऽ चललहुँ---
राति कहिया जेतै दिन कहिया एतै
मन छट-पट करै मुदा हम की करी
हम तऽ चललहुँ। ❑

शीर्षक

सुख मे नहि अगराए
दुख मे नहि घबराए
मनक मनोरथ लेल
कखनहुँ जुनि झमाए।
लऽ कऽ की आएल रही
लऽ कऽ की जाएत कोइ
थथमारैत जिवैत चली
प्रभुकेँ मनमे बसाए।
चौल केलैन कोइ
फल किनको बिषाएन
जिनगीक साँच
सहजे किनको देखाएन।
सहमति- असहमतितऽ
कतहु किनको से कखनहुँ
भएये सकैत छैक
देश,काल,परिवेशक
अपन-अपन बात छैक
तमसकेँ छोड़ि जदी
होमय तऽ मनकेँ बुझाए। ❑

शीर्षक

बहुत केलहुँ धुरखेल
मैथिली धुरा गेली हेँ
सानैत सानैत खेल
मेल सभ गुड़ा गेल हेँ।
बिपटा बनि बनि बात
मंच पर बिपटै केलहुँ
मालाक तर मे मुँह-नाक
सभ नुका लेलहुँ हेँ। ❑

वाह जिनगी

कोइ आशे मगन
कोइ नाचे मगन
कोइ कागजेक घोड़ा
दौड़ाबैत मगन
कतहु जीतो मे हारि
कतहु हैरो मे जीत
अहिना हैर जीत मे फँसाबै जिनगी
वाह जिनगी रे वाह जिनगी।
कोइ भूखे मरै
कोइ खाइते मरै
कोइ झखैत जीबै
कोइ हँसैत जीबै
रंग- बेरंग करै जिनगी
वाह जिनगी रे वाह जिनगी।
कोइ तापे जरै
कोइ शीते ठरै
कोइ बाढिए बौराए
कोइ सुखारे सुखाए
जस अपजस सँ ई छै भरल जिनगी
वाह जिनगी रे वाह जिनगी।
कोइ खटिते मरै

कोइ बैठले मरै
कोइ कामे बेहाल
कोइ चामे नेहाल
बिधाता बनौला अजब जिनगी
वाह जिनगी रे वाह जिनगी। ❑

शीर्षक

रेशमी ताग सँ तगाएल रही
जहिया
मनक दुआरसँ आएल रही
तहिया
बितैत बसंत संग खट- मधुर
जिनगीक
रस,सुगन्ध,रूपक,संग जीवलहुँ
सिनेहिया।
लाजक घोघ तानि एलहुँ चलैत
नहु नहु
संकोचक चदैर ओढि स्वागत, निरव बनि केलहुँ
हम
कतेको बरष बीतल
कनकन,घमाएत,भीजल मन
सिनेहिक सूत सँ बान्हैत उसारैत
कतए से कतए आए एलहुँ
सुरितिया।
सुनलहुँ सिनेहक मधुआएल
मीठ बोल
करवनहुँ भविष्य लेल बुनैत
सेहन्ताक बोल

उठैत आ बैठैत नेनाक नौरपन
संग
बहटारैत सुख-दुखकेँ जीवलहुँ
सुबुद्धिया। ❑

शीर्षक

किछ खास नहि
बस जीबि ली
छल छद्म सँ बचिकेँ
सगर पसरल अछि
नीक अधलाह
बाट मे छद्म रूप धरिकऽ
कतेक संताप सहि जीयत
कियो अपनहुँ बेमातर लेल
कनक केर माया सन लुब्धल अछि
काँट मोह बनिकऽ।
बहुत रोकै छी मनकेँ
करवनहुँ दै भरोस तनकेँ
मुदा सभ लोककेँ
छै गीरने स्वार्थ जोरगर
अजगर बनिकऽ।
कोनो रस्ता कहाँ छै
अपन मनकेँ
काज किछ करबी
हरेक बात संग
सभ सोंच पर आरूढ़ छै
जीद्द कांकोड़ बनिकऽ। ❑

शीर्षक

तों लिखैत रहलह
पानि सन पवित्र
हम पढ़ैत रहलहुँ
पानि सन पवित्र
मुदा पानि पीबऽ बेर
ओ भऽ जाएत छै
अशुद्धआर्सेनिक युक्त
हम की पढ़लहुँ? ❑

कतेक सुख छै

कतेक सुख छै
जिनगिक आँगन मे
भोर होइत छै
हँसऽ लगैछ छै
घर आँगन दुआर
कने ओ हँसी ओतहि सँ लऽ ने लियऽ
के रोकत।
अँगना मे किलैक रहल अछि नेना
ओकर दारिम सन दाँत सँ
कनेक उजास लऽ ने लियऽ
के रोकत।
सिंगरहार केना गम गम
गमैक रहल छै
केना झहैर रहल छै ओकर फूल
धरणी पर
कने सुवास फेफरा मे भरि ने लियऽ
के रोकत।
गुलाबो फुलाएल छै
लाल पियर बैंगनी
झूमि रहल छै अपन
दुबर पातर डारि पर

कहाँ दुखी छै लुब्धल काँट से
ओकरे सँ कने हँसब सीख ने लियऽ
के रोकत।
सगरो जखन रहैत छै अन्हार
एकटा छोटका दीप
केना अपन इजोत सँ
ज्योतित होइत रहैत छै
कहैत रहैत छै
अप्प दीपो भवः
अपनो मे दीपकक ओ भाव भरि ने लियऽ
के रोकत।
तमसो मा सद् गमय। ❑

शीर्षक

बिसरल भूख, पियास,राग
रास, रसायन, रैन
राजनीति, सभ कुटिल नीति
जौं पालो धाएल निज कान्ह।
के ठाढ़ छथि जितता के सभ
बाजब बुझब मोश्किल
कतै कोन हरिवंश बचै छथि
सुनब सोहाएब कठिन छै।
हँसैत खेलाएत आगि पानि बनि
करा ली जँ एलेक्सन
बड़ बुद्धियार भेलौं हम मानी
गंगस्नानक फल सन। ❑

देखि छगुन्ता लागै

रचऽ नहि भेल रचवा जे चाहल
हियाक हहासक गागरि
पल पल जोहैत बाट आशकेर
उमरैत नैन भेल बादरि
गै जिनगी देखि छगुन्ता लागै।
बीछि बीछि कऽ काँट उखारैत
कैलहुँ बाट निरापद
तैयो बिपतीक मारल छोना
घुरि घुरि काँट दिस भागै
गै जिनगी देखि छगुन्ता लागै।
मुदै्दत बीतल नि:श्वासों छोड़ैत
हँसी खुशी भेल सपना
सोंचक झड़ैन झाड़ि रहल नित
अँगनो विदेश सन लागै
गै जिनगी देखि छगुन्ता लागै।
छवि- मनोज मनुज। ❑

प्रतीक्षा

अपन लघु कलेवर मे
विराट काज व्यापारक
प्रतिनिधित्व करबा मे
सक्षम "शब्द ब्रह्म"।
माइक गर्भ मे पलैत जीवकेँ
बाहर निकलवा हेतु
उत्कट प्रतीक्षा
तहिना माता-पिताक
शिशु देखवाक
अर्हिनिश छटपटाहट,
अभिलाषाक प्रतीक्षा।
पढ़ऽ-लिखऽ बला
विद्यार्थीक परीक्षाक
प्रतीक्षा
फेर ओकर परिणामक,
बेरोजगारकेँ नोकरीक
विज्ञापन, परीक्षा पुनः
परिणाम प्रतीक्षा।
बस,ट्रेन,जहाजक
टिकस लेल
टिकट खिड़की,

टिकस बनबऽ बला
एजेन्सी, आदि लग प्रतीक्षा।
प्रतीक्षाक विपुल संसार
कचहरी, अस्पतालेटा नहि
मरबा बाद जड़बा लेल
सेहो प्रतीक्षा। ❑

शीर्षक

यौ कान्ह,
जुग बीतल
अहाँक राधा सन
सखी सभ एखनहुँ
अहाँक बिहुँसैत
छविक छाहैर मे
मौका मिलतहि
ठाढ़ भऽ छहरियाय
लगैत अछि।
की कऽ गेलियै अहाँ
आइ कहबै लेलतऽ
असंख्य कृष्ण
अपन मोहक छविसँ
अनगिनित राधा रुपी
जीवकेँ सिनेहीक छाँह
देबाक यतन केलाह
मुदा विफल रहलाह।
अहाँ कोन जादू काएल
अहाँक मोहपाश मे
बिड़्ड़ोक घास पात सन
चर-अचर,मानव-दानव,

पशु-पक्षी, सभ अहाँमे
समाहित भऽ अपन जनमकेँ
सार्थक बुझैत अछि? ❑

शीर्षक

प्रेमक नहि कोनो रंग होइत छैक।
जेना निरभ्र अकाश।
प्रेमक परिसीमन ओहिना दुष्कर
नापब जेना अकाश।
प्रेम ने कारी गोर होइत छैक
नहि ककरो ओ बपौती
नहु-नहु अंकुरित होइत छैक
दूजा भाव ने आवै
रोकलासँ नहि रोकल होइत छैक
छै नहि ओकर निकास। ❑

शीर्षक

पढ़लहुँ लिखलहुँ
जमा केलहुँ
इनामो ढ़ेरक -ढ़ेर
माय- बाप संग
सर समाजकेर
सदिखन रखलहुँ पेड़
बुझु अहाँ किछ नहि पढ़लहुँ।
बोल-कुबोल सँ व्यथित श्रेष्ठजन
सदिखन काटथि छाह
अपना मने अहाँकेँ मनुआ
सदिखन रहै उछाह
कहू ई कतै पढ़लहुँ
बुझु अहाँ किछ नहि पढ़लहुँ।
सर-समाज निरास नित
सोचथि, ओतैन आब किछु ज्ञान
मुदा गौरवे चूर देखिकऽ
खसैथ भए झूर-झमान
एहन दुर्जन बनलहुँ
बुझु अहाँ किछु नहि पढ़लहुँ। ❑

शीर्षक

राज पाट केर खेल मे
अपन भऽ गेल आन
आइन मान केर फेर मे
बुरिबकहा गमाबे जान।

धप धप नुआँ पहिर लेला
झुकि झुकि लैथ गुहारि
जातिक टिक्का मिल गेलैन
पहुँचला अपन दुआरि। ❑

मोह

मोह छोड़ब बड़ दुष्कर
गीता मे कहल गेल छै
निष्काम योग।
कामना रहित योग,
आ मोह रहित जिनगी
जीयब असान छै कि!
जनमहि सँ दूधक संग
सिनेहक झरना बरसाबऽ वाली माँ
डेन पकड़ि आ आँगुर पकड़ा
जित्ता जिनगी खून पसीना बहबैत बाबू जी,
संगे कोरा-कान्ह खेलवैत
झगड़ा -रगड़ा करैत
कौखन मुँह फुलौने तऽ
कौखन बिहुँसैत
भाइ-बहिनीक नेह -छोहसँ
मोह तोड़ब असान कहाँ छै!
अपन माटि पानि
जाहि पर खेललहुँ नहेलहुँ
जाहि माइक कोइखसँ
उपजल अन्नसँ जिलहुँ
जाहि पानि सँ पियास मेटेलहुँ

गाछ-बेख पर चढ़ि
चोरिया-नुक्की खेललहुँ
भाँति भाँति केर फलकेर
वरदान पेलहुँ,
अपन भाषाक बोल पाबि
समाजसँ नाता जोड़लहुँ
ताहि सभसँ मोह तोड़ब
असान कहाँ छै! ❑

शीर्षक

कखन जिनगी कोन बाट धरत कहब कठिन
सोन सन नेना आ
माय सन घर छोरि
के परदेश जाए चाहै छै,
मुदा जाए परैछै।
कनहा कि बकुचा पर
झोरी टंगने
गाम सँ आँखिक नोर पोछैत
बस, टरेन धेने
मोने मन सोचैत
नहि जानि कोन बिसबासे
अनचिन्ह अनदेखल
परदेश पहुँच जाए छै।
रोजी,रोटी संगे
बेटीक बियाह
मायिक सराधक
कर्ज चुकेबाऽक लेल किनकहु
दुआर ठाढ़ हेबाक लेल
बाध्य भऽ जाएत अछि। ❑

कहाँ पढ़ल भेल

साठि बरख पढ़लाक पछैत
आब लगैत अछि
कहाँ पढ़ल भेल
नेनाक मनक इच्छा
बाबुक भावनाक निचोर
मायक ममता मोल
बहिनिक सिनेहक सूत
सभ गडमड भऽ गेल।
पढ़ैत रहि गेलहुँ जिनगीक
रमैन,सुखसागर
सुनैत रहलहुँ पत्नीक
उलहन, उपराग
धुनैत रहलहुँ अपन कपार
करैत रहलहुँ बाल -बच्चाक
निमैरजन, नीक, बेजाए।
गुरुजन, परिजन, सर-समाज
सभ छुटैत चलि गेल
समाजक ऊँच-नीच
आपैत-बिपैत सँ फराक
लागल रहलहुँ लोढ़ैत-बिछैत
आ कंकड़- पाथरक टिल्ला

सन बनबैत हवेली।
आजुक पढ़ाई ने
अर्थधर्मी बनबैत छैक
हमरा सभक समय
सभ सम्बन्ध जीवैत छलै
गुरुजनक सम्मान
बाबुक कलेश
माइक ममता
बहिनीक दुलार
परिवार-समाजक चिंता
की नहि पढ़ौल जाएत छलै!
तें आब लगैत अछि
जिनगीभरि पढ़िओकेँ
कहाँ पढ़ि सकलहुँ
जिनगीक पढ़ाइ
जिनगी अकारथे जाएत। ❑

प्रेमक बाट

प्रेमक बाट कहाँ चललहुँ कहियो
ओ कोनो देशक राजमार्ग
जकाँ थोरे होएत हेतैक
जे गाड़ी मे चढ़लहुँ आ
पोरबन्दर सँ सिलचर।
किन्नहुँ नहि भऽ सकैत अछि
राजमार्ग, ई प्रेमक बाट
ओ डिस्टिक बोडक सड़क कि
पंचायतोक बाट
ओ बाट नहि भऽ सकैत अछि।
एहन बाट जाहि मे सदैत
ऊँच-नीच, अमीर-गरीब
हीरा -कोयला,लाख-खाख
मूर्ख-विद्वानक खाधि खोधल छै
ओतै चलब बड़ मोश्किल। ❑

तोरे सन गाम

हे बुझलही कि नहि
जहिना हमर गाम
ओहिना तहुँ
तें कहियो रौदी तऽ
कहियो दाही।
बीच बीच मे
हियाकेँ जुड़वैत
लहलहाएत जिनगी
मुदा बड़ कम।
तोरा संग रहैत
कहियो रौदीक मारल
धनहर सन जरल जड़ि
तऽ कहियो काजक
बाढ़ि मे डूबल मात्र
एक आध आँगुर पानि सँ
उगल मुड़ी धुनैत।
बसन्ती हवाके सुँघिते
नहि जानि कतऽ सँ
पतझार झड़-झड़ै लगै छै।
भोरक सुरुज हौ
कि सोहनगर साँझ

हमरा लेल तपैत दुपहरे सन।
ने खेवाक टाइम (हमर दौहित्रक कथनानुसार)
ने कतहु जेबाक टाइम
दरो-दवाइ खेबाक कि
लेवाक कोनो टाइम नहि।
तोंहीं कहि सकैत छेँ
तोरे सन हमर गाम छै ने? ❑

शीर्षक

रोकल होएत
प्रचंड वात
तड़ित त्रास
सम्भारल होएत
अनचोकहि
छुअल गात
बिन बातहि
अनसोहाँत बात
जिनगीक अपसोगारथ लेल
हँसोतैत आँठि पात! ❑

शीर्षक

राग-रंग के खेल
भेल जिनगी पर भारी
अपनहि मे डूमल सभ
लोलना भेलै भारी।

किनकहु नहि छनि ध्यान
एला के द्वार कि आँगन
अपनहि मे छथि मगन
आँगुर घुमैन मन भावन। ❑

मोनक बात

हमर मोनमे
कतेक रास बात औंनैत
रहैत अछि गोले सन
अप्पन-अनकर उपरागे सन
रसगर-तितगर तरकारी सन।
किनकहु लेल तऽ हितकारी छी
किनकहु लेल हम सरकारी छी
किनकहु लेल छोट सुपारी सन
किनकहु लेल छी महकारी सन।
नव स्वार्थ समरकेर मारल हम
स्वार्थऽक कारण दुत्कारल हम
छल कपट मे नहि सकवा कारण
समाजक छी पछिलगवा सन।
नहि करमक खेती हम छोड़ल
नहि गप्पक खेती हम जोतल
हम घाट- बाट बुहारि सदैत
राखैत छी पैत रखवारे सन।
नेना भुटकाकेर झौहैर बिच
आनन्दक हिलकोर देखैत
एखनहुँ नेनाक किलकारीसँ
अभिभूत रहै छी माइयेसन।

एखनहुँ चरकाहा कहबा मे
कनिको धाक जतय नहि छै
धूरामे लेटाएल नेना सभकेँ
मुशहरबा कहबामे दोषने छै
ओहि पावन देशक माटिक छी
हम घास-पात गेनहारी सन। ❑

एहन गलती किएक करै छी?

एहन गलती किएक करै छी
नितहुँ घेंट झुकौने रहै छी?
सभटा नीक दोसरे जँ करै छै
अहाँ किएक फिरसान रहै छी
नितहुँ घेंट झुकौने रहै छी?
किनकहु खेत नितरोज उजरै छै
किनकहु बाट नितरोज घेराएत छै
झुठहुँ अहाँ हुहआइत रहै छी
नितहुँ घेंट नुकौने रहै छी?
कोइ करै चोरी कौइ बरजोरी
कोइ ठकै बाते कोइ हाथजोड़ि
कतऽ-कतऽ बौआइत रहै छी
नितहुँ घेंट नुकौने रहै छी?
कोइ हथियाबै माल खजाना
कोइ हथियाबै मनुषक दाना
अहाँ किएक बिधुआएल रहै छी
झुठहुँ घेंट नुकौने रहै छी?
कोइ बापकेँ जानसँ मारै
कोइ भाइसँ त्राण लैत भागै
धनकपाठ जे जनमिते सिखतै
ओकर काजसँ किएक कनै छी

झुठहुँ घेंट झुकौने रहै छी?
जे जतेकटा डाउन बनल छै
ओतबहि ओकरा मान मिलै छै
अन्तरी-सन्तरीकेँ के पुछै
बड़का-बड़का सलामी दै छै
ओकरा ओएहटा काम अबै छै
अहाँ बेकार फिरसान होएत छी
बल्लहुलेल हल्कान होएत छी! ❑

शीर्षक

सुआद- कुसुआद
करू आ कि तीत
जीभक चटकार
ने आर किछो।
जीवा लेल तऽ
बस पोषक वस्तु
हरियर टटका नहि
आर किछो।
तेलगर तिलकोरक
पात रहै आ कि
नवका मुनगाकेर
पात रहै
चठैल चढ़ल पिठार रहै
सभ तरूएकेर रूप
ने आर किछो।
अल्लू परोर कि कोबी हो
भाटा मुरै कि अदौड़ी हो
करैल कुन्दरी कि कदीमा हो
जँ रंग बिरंग मशल्ला सँ
घोरल बोरल तरकारी हो
तऽ जीभक चटकार

ने आर कछो।
माछ संगे मरुआ रोटी
आ दालि संगे मरुआ रोटी
दूध दही जँ मिलै भरपूर
तऽ ताकैत लेल
नहि आर किछो। ❑

बरखा

राति अन्हरिया लगै भियौन
आम बिनु गाछी भेल डरौन।
साँप- बेंगकेर खेलक कारण
मनुखक जिनगी भेल झमान।
झिंगुरकेर पिपहीक आगाँ
अनकर बजना सभ भेल बेकाम।
मेघराज मुदित भै बरसथि
हुनका लेल कहु कोन लगाम।
अदरा पावैन केलैन गृहस्थ सभ
खेत अबाद कय करथि अराम। ❑

धृतराष्ट्र

धृतराष्ट्र कहब जतेक असान
बनब ओतबे कठिन छै
किनकर की कथनी
किनकर की करनी
सुनैत अँखियासैत
अपन इच्छा अनिच्छाकेँ
तौलैत-भझारैत
कोनो निर्णय तक पहुँचब
कतेक कठिन होएत हेतैक?
अपनाकेँ निरबल, निसहाय
मानैत व्यक्तिकेँ जखन
अर्द्धांगिनी सेहो आँखि पर
पट्टी बन्हने होथि
तखनतऽ जियब आर कठिन
सौ-सौ पुत्र, पुत्र-बधुक संगे-संग
सैकड़ो,हजारो परिजन-पुरजन संग
शासक बनि जीयब कतेक कठिन छै? ❑

बरषा

हे अदराकेर मेघ
तों जतेक बरसै छ:
हम ओहिसँ कम कहाँ बरसै छी
मुदा तोहर पानिसँ
धरणीक पियास मेटाइ छैक
ओ धारित करैत अछि
ओ बीहनि जाहिसँ उपजै छै अन्न
ओहिकेर अहार बना
दुनियाँ जीवैत छै ।
हमर वरषासँ भीजैत अछि
हम जखन बरषै छी तँ
भिजैत अछि-
हमर कपोल, मुँह, ठोर
हमर ओढ़न, पहिरन
आ हमरासँ जुरल लोक
ओकर गुणों तँ नोनछाहे ने
के संजोगतै हमर पानि
किएक बजौतै एहन मेघ!
तों बरसैत रहऽ
जुड़वैत रहऽ जिनगी
हमर आ तोहर बरषब

एक कोना भऽ सकैत अछि
तों तऽ बरैषकऽ शेष भऽ जेबह
हम कोना शेष भऽ सकैत छी
हमरा तऽ नव सन्ततिकेँ
जनम सेहो ने देबाक अछि! ❑

शीर्षक

कोइ कोना करत विश्वास
सकल जग भऽ गेल लोभी
आइ पहीर लेलक जे चोल
वएह छथि जगतकेँ योगी।
दुर्दिन करै विचार किएक
सभ एना करै छै
अपने तऽ मरिते छै संगहि
सभकेँ मारै छै।
माया अपरंपार जगत केर
अद्भुत खिस्सा
सभकिछु बुझैत नचार भेल
भोगै दुरदाशा।
देखि जगत आनन्द करै
दिन- राति सभ चिन्तन
एक दिन छुटत ई गाम
ने ई जिनगी छै चिरंतन। ❑

शीर्षक

हे, खूब बरसलै मेघ
चारूदिस पानिये पानि
एक तोज खेरही और होएतै
कनेक रुकि ने जाउ पानि
मेघ कनेक दम धरितै तऽ
कतेक मन खेरही
आबि जैतै आँगन
फेर बरिसैत रहितै मेघ।
तू तू खसऽ लगलै आम
कलमी कि सरही
एहि पानिमे के तोड़तै आम
तै पर ई जानमारु बिजलोका
जाने नहि रहतै तऽ
की हेतै आम।

शीर्षक

ई कोरोना अलगे केने छै ताल
गामो-गमाएत मे डेगे-डेग
लागि जायछै ढ़ाठ
आबर-जात तऽ छै मुदा
लोक नहि चाहैत अछि
सोहर देहे गाम छोड़ब
टना-टनी तऽ लोक
सभदिन जाइये रहल
अछि सुरधाम।
सभ किछु भेल जाए छै
फिक्का
बिबाह,मुण्डन,उपनैन
सभटा जेना उसना सन
पहिरब-ओढ़ब सभ
लगै छै बिसनोने सन।
की करतै लोक
कतऽ जेतै लोक
कतऽ विलमि कोइ
रखतै धैरज
सभ भुतला रहल छै
आब तऽ घरो-दुआर

बनाकऽ रहऽ बला लोक
डिल्ली बम्बै मे औना
रहल छै,
कोना पहुँची गाम। ❑

दुलार

तोहर दुधक दाँत मे
मोतीक उजास छौ
ठोर पर देखहिन ने
गुलाबक हुलास छौ
सांस मे बसै छौ
चमेलीकेर सौरभ
आँखिक निर्मलता मे
सरसिजकेर वास छौ
मऽन मे कहाँ छौ कोनो
बातक धरी- धोखा
मन मे जे उचरै छौ
वएह ने निकसे छो
सभतें सेहन्ता सँ
करैत दुलार छौ। ❑

सिनेहक रोटी

माए हाथक रोटी
खेने छी माए हाथक रोटी?
गोइठा जारनिक आगि
माटिक चुल्हि
माटिक तावा पर बनल रोटी
सोहारी (आजुक रोटी) नहि
ओहि मे हँसोतल माइक सिनेह।
सूप मे सनाएत चिक्कस
चिक्कसक लोइया
दुनु हाथक सिनेहसँ गोल होएत
धीरे धीरे गोलाइ मे बढ़ैत
मरूआ वा चाऊरक
सुअदगर मोट मोट रोटी।
अपना खेतक ऊलबा राहरिक दालि आ पोरो सागक दलिसग्गा
नोन, अँचार, हरियर मिरचाइ
आ पियाजक चटनी संग
खेने छी माए हाथक रोटी?
एक आँखिए पीढ़ी पर बैठल बेटाकेँ देखैत जुड़ाएत
दोसर आँखिए ताकैत रोटी
पझाइत चुल्हिक आँच

आ हिलसैत पोछैत
माथक पसेना
किनकहु मन अछि?
हमरा तऽ मन अछि
कि हमर माएकेँ
नहि एलैन बेलऽ
चकबा बेलना परहक रोटी
तें जखन गाम अबैत रही
तऽ माए खुआबैत छली
अपना हाथे सिनेहक रोटी। ❑

मोन अछि?

मोन पड़ै अछि
अपन बड़की माँ
जिनका सलाइ नहि बारऽ एलैन
ओ आगिएसँ आगि सुनगऽवै छली।
ओहि समय सलाइ महग छलै
जारैन सस्त रहै
भरिदिन आगि चुल्हि मे
छाऊरसँ झाँपल रहैत छलै।
आन- आन आँगनसँ
जनानी सभ आगि माँगऽ अबैत
रहथिन
आगि मिलला पर खुशी खुशी
जाएत रहैथ
कोनो दिन जखन कोनो वृद्धाकेँ
हमसभ आगि दियैन तऽ
आशीषो पबैत रही जीबू बाऊ
कि जीबू दाइ ।
मुदा जखन बड़की माँकेँ
कहियैन तऽ ओ बिगड़ैथ
फल्लींकेँ ई आदैत छनि
धिया-पुतासँ आगि माँगव

आगि- छय कहीं धिया-पुतासँ
माँगल जाय।
किनकहु किनकहु ओसार पर
नहि,चुटा कि छोलनी पर
आँगन मे ठाढ़ लोककेँ गोइठा
पर आगि गिरा देल जाय।
माटिक चुलहा।
माटिक कड़ाही।
माटिक तौला।
माटिक तावा।
माटिक घैल।
लकड़ीक दियैठ,
लकड़ीक भतलड़ना,
बाँसक लाड़ैन,
बाँसक सूप आ
सूप मे सनाएत
मरूआ आ चाऊरक चिक्कस। ❑

गीत

जहिना चमकै छै बिजलोका
तहिना गरजै मेघ निधोखा
सगरो गुज-गुज छै अन्हरिया
छाती धर-धर धरकै ना।
हरदम मनमे होइ अछि धोखा
घुरि घुरि ताकी आँगन मोखा
रहि रहि सुमरी बाबा सोखा
जिनगी कतय बिलमला ना।
कहला आबि रहल छी लगले
अबैछै लोक जेना दिन खगले
लगै ये सपना देखै छी जगले
 छणे- छण मन उमतावै ना
सगरो गुज-गुज छै अन्हरिया
छाती धर-धर धरकै ना। ❑

अहूँ अगुता गेलहुँ!

जिनगीक जिगास में
सहजहि विलास मे
छोट छिन पियास सँ
अहूँ अगुता गेलहुँ।
आगुए मे राखल छल
आम सँ भरल मौनी
मुँहठी नहि काटल छल
ताहि लेल खिसिया गेलहुँ
छोट छिन पियास सँ
अहूँ अगुता गेलहुँ।
पानक पनबसना
सोझहे में राखल
सभटा सरंजाम
ओहि मे संजोगल
पान बिनु कहूतऽ
केहन मौला गेलहुँ
छोट छिन पियास सँ
अहूँ अगुता गेलहुँ।
मुनिया छल कोरा मे
कलसे मे पानि छल
लोटो तऽ ओतहि

कलसे पर धाएल छल
पियासक बहने कोना
अहूँ उपराग देलहुँ
छोट छिन पियास सँ
अहूँ ओगता गेलहुँ।
जिनगी मे नितहु अहिना
खगता रहैत छैक
आपसी मदैद सँ
ई गाड़ी चलैत छै
अपनहि हिकमैत सँ
अपने तमशा गेलहुँ
छोट छिन पियास सँ
अहूँ ओगता गेलहुँ। ❑

शीर्षक

सुखक तरास में
महलक देखौंस मे
घुमैत छी दिन राति
पूरब सँ पछिम
उत्तर सँ दखिन
देश सँ विदेश धरि
लाखक लाख चुपेचाप
आनि-आनि बौगली भरै छी
देश कि विदेश मे
जखन बिपैत घेरैत अछि
सौंसे घरबैया मिलि
सरकारकेँ गरयाबै छी
जें नहि कामदेल
तें ने विदेश गेलै
ई नहि कोइ कहै
जें नहि सरकार
हजारक हजार
डॉलर देल
तें ने विदेश गेल
गामक खेत बेख
हक्कन कनैत छै

गामक निर्माण काज
नितहु हँफियैत छै
किनका से कहल जाय
किनका सँ रार ठानी
जेना तेना टाका आबै
तहन तऽ ठीक अछि
नहि तऽ सरकार आ
शासन खराप छै।
हमरहु बाऊ सभ
बनौने छथि पासपोर्ट
जेबालेल विदेश सभ
हुलकी मारै छथि
जाउथ ने विदेश
अपन देश तब बुझेतैन
अपन हारल कोइ
थोरे कहै छै,
तखनो कोना मानि ली
शासन खराप छै! ❑

पद्मक पराग

चननक सुवास
पुष्पित वात
केवरा केर प्रात
आमक मिठास
जामुनकेर स्वाद
सभ रहत संग जखन
मन प्रसन्न रहत। ❑

अणु

अणु
में
जिजिविषा
अंकुरित
हो।
जीवन
में
यौवन
संतुलित
हो।
जीवन
की
बगिया
पल्लवित
पुष्पित
हो। ❑

हमर बाबूजी

एकटा बेटा कोनो बेटा होएछै,
हमर बाबूजी कहैत छलखिन
एकटा बेटे की,एकटा रुपैये की!
कहाँ कहियो मारलथि
दवारब सेहो मन नहि पड़ैत अछि।
सौंसे टोल की,सौंसे गामक बाबा आ काका छलथिन
जावत दुआर पर रहैत छलाह
धिया-पुता घेरने रहैत छलैन्ह
बाबा खिस्सा कहियो ने
हम पाएर जाँइत दै छै
हम आँगुर फोरि दै छी
बाबा पानि पीबै आनि दी
खूब नीक सँ लोटा माँजिकऽ
आनि देब।
बाबा तमाकू लेबै अँगना सँ
आनि दी?
बाबूजी चलि गेलाह
दुआरो टुटि गेल
दुआर संगहि बाबा पोताक
संवादो विदा भेल।

बौआ खेलहुँ?
आइ स्कूल नहि जेबै? ओ आइ रवि छियै?
की खेलहुँ?
हे, नहाए लेल पोखरि नहि जाएब!
हँ हुनक दवार सुनलहुँ
जखन अपन कि आनक
धिया-पुताकेँ हँटैत दबारैत
ओ सुनि लैथ कि धिया-पुता
कहि देलकैन।
फेर तँ सुनैत रहू
कहियो तऽ तामसे
खएको ने खाइत छलैथ।
बाबूजी, सभदिन नहि
कहियोकेँ बड़ मोन पड़ै छी,
अहीं जकाँ हमरो कान मे
बड़- जाड़ होएत अछि
मुदा कमल छोड़ि कहियो
तुराइ पसिन नहि से किएक!
एक दिन हम कहने रही
बाबू तुराइ बनबा दी,
जाड़ होएत हैत?
कहलहुँ नहि, हम कमले ओढ़ब।
हम कोना रहै छी, की खाएत छी
आबो चिंता करैत छी?
हम तऽ सबूर बन्हने अहींक
सिनेह सँ भीजैत

अहींक बरसल बुन्न छी
कखनहुँ फुटिकऽ बिला जाएब
मुदा अहींक रहब,
अहीं मे रहब
चाहे कतहु रही।
नमामि ।❑

नहि किछु लागै नीक

पता नहि आइ की भेलै
लगै सकल जग भिन्न
जानि नहि आइ की भेलै ।
भरिदिन झींसी झीक देने
घुरियाबैत रहलैह
आँगन खेत बथान कलम
सभ जक-थकैले रहले।
कहाँ भेलै कोनो काम आइ
सभ असमंजस मे रहले
नहि किछु लागै नीक
पता नहि आइ की भेलै। ❑

खेरहा

जिनका लेल सदैत बेहाल रही
मायामे सदैत ओझराएल रही
ओ पुछता की हम कहबैन की
नित हुनकर खेरहा कतेक कही!
जिनका बुझहब जतेक सहचर
चढौताह चाँस पर वैह ओतबे
अहाँ कतहु गिरी बलु कोनहु भरे
अभिलाषक हुनकर की बात कही!
सभरुपे सुन्दर सुशील ओ छथि
मुहजोर कनेक कमजोरो छथि
उमेरक होश नहि कनिको छनि
मीठबोलक हुनकर की बात कही!
जिनगी छनि तऽ चिनगीयो छनि
भाषाकेर धधकैत आगियो छनि
आगि बरसाबैत आँखिक आगाँ
हुनक सिनेहक की बात कही! ❑

शीर्षक

हम नहि सुनबै तऽ सुनतै के
बोल -कुबोल आर बजतै के।
देखनिहार जखन रामे छथि
तखन ताकुत दोसर करतै के।
जे नैन बिहीन सूर देखलाह
हुनका सँ परतर करतै के।
बेबसकेर एहि दुनिया मे
जिनगीक बाट देखेतै के।
राम-रमौबल कतबो कऽ ली
सुखियाकेर बात बतौता के। ❑

शीर्षक

आब नहि मन मे क्राथ कोनो राखव
मन लगै झुझुआन
अपन नीक बेजा बड़ सोचल
मन भेल सदैत मलान।
नीक बेजाए पड़ोसिये बुझू
नीक देख बहुत नहि रीझू
भिनसरेक संग अछि साँझ
मन किएक करब मलान।
श्याम पटोर पहिरने औती
ओकरे पहिरने रजनी जेती
की भिनसर साँझ हुनका लेल
राखै अपन काज पर ध्यान
मन ओ किएक करत मलान। ❑

बरक गाछ (वटवृक्ष)

हम बरऽक गाछ छी
गाछ विरीछक एक प्रजाति
फूल नहि
मात्र लालटूस छोटे-छोट
फऽर होएत अछि
मनुख गीरल पीचल देखि
घिनेबे करैत अछि
मुदा हम मनुख सँ
घिरना किएक करब
हम गाछ छी ने!
मनुख मनुख सँ
घिरना करैत छथि,
पशु-पक्षी सँ घिरना करैत छथि
घास-पात,थाल-पानिकेँ के कहै
अपना छोड़ि अपन समांगो सँ
घिरना कऽ सकैत छथि
मुदा हम तऽ गाछ छी!
हम सुरुजक ताप सँ
माटिक भीतर बाँचल जल सँ
अपन पोषण करैत छी
कोनो जरूरी नहि जे

मनुखे हमर बियाक
संरक्षण कऽ लगौताह
हम तऽ चिड़य-चुनमुनक
बिष्टाक मादे सेहो कतहु
जनैम सकैत छी!
अपन ठाढ़ि मे जड़ि जनमाकऽ
अपन अनेक जड़ि बना
अपना कैँ साधैत रहैत छी
तें सैकड़ो बसंत
जीबि सकैत छी।
हे,हम मात्र गाछे टा नहि
चिड़य-चुनमुनक अवलम्ब,
माल-जालक संगे-संग
हरबाह-चरबाहक
सुस्तेबाक लेल, छाहरि छी।
हमर फऽर चिड़ै-चुनमुनक
आहार अछि
हमर पात भेंड़ बकरीक
सुस्वाद भोजन
हमर सुखल ठाढ़ि आ पात
जाड़ैन बनैत अछि।
हम जीव-जंतु लेल
प्राण-वायुक निर्माण करैत छी
माटिकैँ क्षरण सँ बचाबैत छी
एतबा केलाक बादो
मनुख हमरा उपटाबऽ सँ

कनिको धखाएत नहि अछि।
की हमरा उपटाकऽ
मनुख जीबि सकैत अछि? ❑

पर्यावरण-सुरक्षा

रुचिर-रूप,रस-रंग,स्वाद सँ
अपनहि ओ वर दैत अछि
मात्र सिनेह सहारा लऽकेँ
जिनगी हमर बचबैत अछि
आजुक दिनकेँ मऽन राखि
हम अपन पड़ोस बचाबी
पर्यावरण केर सुरक्षा मादे
संकल्प अपन दोहराबी।
पर्यावरणक सुरक्षा
हमरा सभहक दायित्व अछि। ❑

की राखल छै

जुनि टोकू हम जाएब घुमि फेर ओतहि
राखल छै की,आम-लताम मे एतहि।
खाएत- पिबैत रहलहुँ जे मन होय छल
निश्चिंत छलहुँ भाइ-बहिनकेँ की हेतै
राखल छै की,आम लताम मे एतहि।
खेत-पथार, बाबू मायकेँ हम की कऽ सकबै
हम परदेशी हमरा सँ की हेतैहि
की राखल छै,आम- लताम मे एतहि।
गाम मे रहि हम कतेक दिन जी सकबै
गाम-घरक नहि काम काएलआब हेतै
की राखल छै,आम-लताम मे एतहि।
फेर काम शुरू भऽ रहलै सभटा सभतैर
हमरो मालिक केर काम शुरू ने हेतै
की राखल छै,आम-लताम मे एतहि। ❑

आब की करी

मन अछि बड़ क्षुब्ध मुदा आब की करी
समाजक यैह छै बेवहार कहू आब की करी।
देखियौन इज्जैत छोड़ि दौड़थि बाट पर
मान्यवरकेर देखि छिछा कहू आब की करी।
रोग छै विकराल छुतहा पसरि रहल
काल बिछौलकै जाल कहू आब की करी।
क्यो बात ने मानथि ककरहु किछु करु
सभ झूठक करैथ व्यापार कहू आब की करी।
बाट लगै अन्हार एसगर शिव की करत
क्यो बात ने एखनहु मानए कहू आब की करी। ❑

शीर्षक

घर भेल जेल सन
देह भेल सेल सन।
पेट भेल खेत सन
नेन भेल गेट सन।
सुजल सुफल शुभ
भेल अछि बेख सन।
सुख केर छल बल
उड़ि गेल मेघ सन।
अगम- निगम सभ
बिलहल बेल सन। ❑

मन जखन भीजै छै

नितहु अधरतिया मे
मऽन जखन भीजै छै
शब्द तखन सीझै छै
सगरो गुलमोहर केर
रंग तखन छिटकै छै।
सुगंधा बनि केबला
काँटो बनि गमकै छै
रजनी गंधा रातिए मे
तरेगण सन चमकै छै।
नीनक केबाड़
बेबहार की जानऽ गेलै
अर दर बजै छै संगे
माथो धुनैत छै। ❑

केहन छी कोना छी!

आइ काल्हि जुनि पुछू
केहन छी,कोना छी!
कखनहुँ धरनी तऽ
कखनहुँ अकाश छी
आइ काल्हि जुनि पुछू
केहन छी,कोना छी!
बैठल छी घरे मे
हकमैत अछि जान
घरे मे घुरियैत
भेल छी फिरसान
कखनहु बसंत सन
कखनहुँ पतझार छी
आइ काल्हि जुनि पुछू
केहन छी,कोना छी!
काल्हिये तऽ घुटराक
माय छल गछारने
चलथुन कनी अँगना
घुटराकेँ बुझबथुन
बुझबैत सोझराएबैत
आब अपने
अपसियाँत छी

आइ काल्हि जुनि पुछू
केहन छी,कोना छी।
कोरो मे मेँ
आ कनहो पर मेँ
जाइतो कालमे
अबितो काल मेँ
देख देख दुनियाक
हाल सँ बेहाल छी
आइ काल्हि जुनि पुछू
केहन छी, कोना छी। ❑

शीर्षक

मधुमास मे मधुआएल सन
पुष्पक पराग सन
पावसक बुन्न सँ
नहाएल सर्वांग सन
प्रियाक प्रीतम तऽ
अहीं छी, अहीं छी
अहीं छी अनुराग सन। ❑

अपन डीह

हमरा खूब मन अछि
अहाँक मन नहि छल
मुदा जखन
नेना भुटकाक
मौलाएल मुँह
देखैत छलियै तऽ
अतमा खंघरऽ
लगैत छल
आस पड़ोसक
धिया-पुता जखन
पहीर ओढ़िकेँ
निकलैत छलै
मन मसोसिकेँ
रहि जाएत रही
बड़ असान नहि
होएत छैक
अपन डीह-डावर
छोड़ि परदेश बऽसब
मन मारि अघनाक
पछोड़ि धऽ हम
परदेश आएल रही। ❑

अहीं संग

आइ छगुन्ता लगैये
कोना बीत गेलै
दिन,मास,बरखक-बरख
हम नगर मे
अहाँ गाम मे
सुख-सेहन्ता
केकरा कहै छै
सब बिसैर गेलहुँ
घर बन्हाएल
बेटी बिदा भऽ
अपन सासुर बसैये
बेटा अपन परिवार संग
आनन्द करैये
हम चौक पर ठाढ
सोचि रहल छी
की करी ,कोना करी
कतय जाय
कतय रही
मुदा,आब किछ नहि
हम रहब तऽ
अहीं संग
जीयब तऽ अपने अहीं संग! ❑

फाँस

कतबो गीत गेलहुँ तैयो
जिनगी फँसल फाँसमे।
एक दू जोड़ैत घटबैत
फँसले जाय छी फाँसमे।
अन्हरिया बढ़ले जाए छै
दिनो-दिन जाँचमे।
मृत्युक अगियासीक आगि
पसरले जाए छै प्राँत मे।
लुत्ती सन उड़ै छै सगरो
जेना चिनगी उड़ै बाँसमे। ❑

सुख-दुख

नहि अछि गुमान शान कथी पर करी
अछि कनेक लाज काज कोना ई करी।
कहाँ भेलै कहल जुम्मन कैं कोनो बात
पंचैती मे बुझा गेलै ओकरो सभ बात ।
राति बहुत कारी अमवस्याक छलै
ओतहि तँ पुर्णिमाक इजोरियो होइ छै।
सभ दिन नहि सभहक एक रहै छै
सुख आ दुखो अहिना अबैत रहै छै। ❑

बिडम्बना

जिनगी अछि पियास सन
सुरक्षा छै निराश सन।
सुरक्षाक कोठली देखि
लगैत अछि मशान सन।
दान भेटलै जिनगी लेल
कोई लुटै छै कसाइ सन।
रोगी अपन जान ताकै
ठिकेदार लेल धैन सन।
रोगीक जे अहार मारै
मरे ओ कंगाल सन। ❑

मरतै गरीबहे

मरतौ गरीबहे
धनिकहाकेँ की छै!
बड़का लेल हवा गाड़ी
छोटका लेल पैर गाड़ी
बड़का लेल हवाई जहाज
छोटका लेल की छै?
मरतै-
एलै बेमारी चढ़िकेँ विमान पर
शहर मे एलै ट्रेन आ बस सँ
गाम मे एलै चोरबाक डेग सन
आब पसरतै टोला मे देह सँ
मरतै गरीबहे
धनिकाहाकेँ की छै।
किनकहु बेटीक तऽ
बेटाक किनकहु
मासक मास सँ
लगन रुकल छनि
आब की आगू लगन
नहि औतै
घरे मे एखन रहूने चैन सँ
मरतै गरीबहे

धनिकाहा कैं की छै।
करोना काल
मरतै गरीबहे
गाम सँ नगर धरि
बौएबाक चिन्ता
जवान जुहानकेँ
घरैर केने छनि
जेताह बाहर तऽ
और की हेतै
एक संगे कतेक
जेताह जान सँ
मरतै गरीबहे
धनिकाहा कैं की छै।
खेत खाय महींस
मुँह चुड़ाय परुक
ओहने मारि खाय आइ
गरीब डिरियाए छै
मरतै गरीबहे
धनिकाहाकैं की छै।
शराब आ दारुक
पैंत सगरो लागल छै
सैंकड़ों, हजारों लोक
भाँज मे लागल छै
जिनगी सँ निशा
अधिक जरूरी छै
धेने जाए छै रोग

कहुँ मरी ने विदेश सन
मरतै गरीबहे
धनिकाहाकेँ की छै।
आँखि, कान, बुद्धि सभटा
स्वार्थ मे सन्हिएल छै
सरकारक नेत सेहो
भोटले अन्हराएल छै
देखिकेँ तमाशा हमहुँ
ठाढ़ छी बौक सन
मरतै गरीबहे
धनिकाहाकेँ की छै। ❑

करोना काल

आब सभ ताकैत रहू!
नीक दिन कहिया एतै
आब सभ ताकैत रहू।
अपन-अपन आँगन
आ दुरुखा पर ठाढ़
केवाड़क फाँक आकि
झरोखा पर ठाढ़
करैत रहलहुँ मनमानी
तऽ उहो दिन ऐबे करतै
नीक दिन कहिया औतै
आब सभ ताकैत रहू।
सुरुज तऽ उगबे करथिन्ह
इजोतो ओहिना रहतै
राति सेहो नितहु
सौंसे पसरिते रहतै
दिनकेर उजास मुदा
ओहिना बिलहैत रहत
नीक दिन कहिया औतै
आब सभ ताकैत रहू।
किनकहु चिंता छलनि
बाट कहिया खुलतै

किनकहु ट्रेन आ
जहाज कहिया चलतै
शुरू भेले एकपीठिया
बसो आ ट्रेनो सभ
आब खलबली अछि
सरकार ई की केलकै
नीक दिन कहिया औतै
आब सभ ताकैत रहू। ❑

करोना काल

सभ किछु छै!
अन्न छै
बस्त्र छै
खोपड़ीये,
किएक ने हौ
रहबा लेल तँ घर छै।
चौकी, बिछौना छै
बकरी, आ गाइयो छै
बाल-बच्चा, लेध-गोध
सौंसे संसार छै।
घऽर बला सेहो अखन
आँखीक सोझे छै
तैयो बेचारीकेँ
कखनहुँ ने चैन छै।
जहिया सँ बन्दी
बेमारी सुनलकै
लेध-गोध नेना लेल
अत्मा कँपैत छै।
कहबा पर छौड़ा ने
छौड़ीये सुनै छै
अपन बतारी सँग

ढ़हनाएत फिरै छै।
माताक किरपा
कि बाबाक आशीर्वादे
टोला एखनहुँ
बिपैत सँ बाँचल छै
धोंछी करोनिया
जानि नहि कतेककेँ खेतै
अही दुआरे सभहक
भूखो बिलाएल छै। ❑

प्राकृत

गाछो तऽ सजीबे छै!
गाछो तऽ जनमै छै
अपने हिंसाबे ओ
चतरै बढ़ै छै।
रौद मे घमाएत ओ
शीत मे जड़ाएतो
पानि मे भीजैत ओ
अपना कैँ साधैत छै।
सुरज छै बाप ओकर
माय छै धरती
मेघ आ बसात
एकरा थथमारैत छै।
अपन डाढ़ि-पातकैँ
अपनहि सम्हारैत ओ
दिन कि राति हौ
फुलाएत-फरैत छै।
किनकहु ने निरास
जेहो करै छै अघात
सभकैँ फूल- फल
दैत नहि अघाएत छै।
मनुष, माल-जाल

सभ पाबै छै- छाँह नित
तैयौ घात- प्रतिघातकेर
बानि नहि छोड़ै छै।
अहिना सुरुज,चान
मेघ,वात,धार,धरा
सौंसे जगतकेँ
पोषैत-पालैत छै।
सभसँ महान, ज्ञानवान
कहबैका जीब
सभ पालनहारकेँ
औंठा देखाबै छै।
भोगै छै रोग-शोक
बाढ़ि आ अकालकेँ
तैयो अज्ञानीसन
जिद अपन धेने छै।
आबो ने चेतब तऽ
भोगब महान दुख
सुख-समृद्धिक
प्राकृतेटा आश छै। ❑

सत्ता

कोनो गाछक झोंझ मे
लटकल एकटा
गोपी लाल आम
जकरा अपन चोखगर लोल सँ
खोधबा लेल अपसियाँत
अगणित चिड़ै!

कविता

कोनो अहिबातीक
सिनूर निञ
जे पति के मरलाक बाद
पोछा जाइछ! ❑

करोना काल

बाउल सँ तेल निकालब
जेना मोसकिल छै
घोघ सँ मुँह निकालब
ओहिनामोसकिल छै।
तोरि आनब तरेगन
रस्ता खुलऽदियौक
एखन तऽ घर सँ निकलब
सेहो मोसकिल छै।
भरम मे जुनि भटकू एखन
घरे मे रहू
देश सँ गाम धरि महामारी
सँ बाँचब मोसकिल छै।
बाऊ फुटानी एखन कनेक
कऽम करू
लोककेर जान बाँचब तऽ
भेल मोसकिल छै।
डिल्ली बम्बै सँ जुनि एना भागू
स्कूल मे एतऽ एसगर रहब
बड़ मोसकिल छै। ❑

करोना काल

घर अछि घराड़ी अछि
पानअछि सुपारी अछि
पाकल उड़ल केश संग
पाकल पाकल दाढ़ी अछि।
दूध अछि ने डाढ़ी अछि
तर ने तरकारी अछि
सजमनि कदामी उपटल
सुखल सोहारी अछि।
नोन अछि तेल अछि
ठुड्ड़ी लताम अछि
आम अछि ने जौम अछि
बाड़ी में किछ भांग अछि।
देह अछि आ जान अछि
मन मुदा फिरसान अछि
सुनैछी छुतराही कोरोना
आबि गेल गाम अछि।
काम ने कोनो धंधा छै
तीन रोटी बान्हल छै
घरो में बैठैत उठैत
सभहक मनअपचंक छै।
मन सभ मसोसैत अछि

माँथ सभ हँसोतैत अछि
करवन के कतऽ फँसत
बुझब नहि असान अछि। ❑

सरिपहुँ सभ भसिआएल जाइ छी

राजतंत्र केर अलगे खिस्सा
प्रजातंत्र केर अलगे छिच्छा
अपन-अपन डफरी नेने सभ
अपने ताले खूब नचैत छी
सरिपहुँ सभ भसिआएल जाय छी।
किनकहु बात कियो नहि मानै
अपन-अपन डींग सभ हाँकै
कखनहुँ पुरबा कखनहुँ पछवा
अन्हर पानि पाथर खसबै छै
बात बात मे सदिखन सभकियो
माँर जका उधियाएत रहैत छी
सरिपहुँ सभ भसिआएल जाय छी।
किनकहु अपन पौरुष गौरव
किनकहु अपन बुद्धीक गौरव
किनकहु नीति नियमकेर गौरब
किनकहु पद प्रतिष्ठाक गौरव
सभकिछु रहितहुँ अपन बियरि में
किएक तखन घुसिआएल रहै छी
सरिपहुँ सभ भसिआएल जाय छी।
अपन बरद कुरिहरीये नाथब
सभकियो अपने ताले नाचब

मालभोग बासमती ये राखब
पाखैर जसबा परले रहतै
मैथिलीक उद्धारक मादे
तखन बेकार कोनो बात करै छी
सरिपहुँ सभ भसिआएल जाए छी। ❑

दुमासा

ई दूमासा भेलै?
चैत मे चित्त धीरज बान्हल
अगम छल दिन- राति यौ
वैशाखो अछि आब ओहिना बीतैत
कोना रहब मन मारि यौ।
माछ मौस सेहन्ता भऽ गेल
आएल केहन अतिकाल यौ
फलो भेटब दुर्लभ भेल अछि
देह कोना पोसल जाएत यौ।
तर-तरकारी मे आगि लागल
खोंटि-खोंटि गुजर चलाऊ यौ
जियब कहुना तऽ देखब आगू
जिनगीकेँ कहुना बचाऊ यौ। ❑

शीर्षक

नाम सुनलहुँ बहुत
काम देखलहुँ बहुत
मुदा आरो बहुत
करमयोगी भेलाह
नहि नाकेँ पर तामस
अहाँ सन देखल
नहि कौआक पाछू
ओ दौड़ैत छलाह
एखनहुँ बहुत पैघ
जन छथि मुदा
अकिंचन के कंचन
बनौता किएक!!! ❑

जूड़शीतल

जुड़ाएल रहू
नेना मे सभ बरख माय
सुतले मे जुड़हरसँ जल लय
जूड़शीतल दिन
माथपर दैत कहैत छलीह
जुड़ाएल रहू।
जुड़ाएब की होएत छैक
कहाँ बुझैत छलियै तहिया
बाबू जी खड़ाम खटखटबैत
अबैत छलाह किछु कालक बाद
आ माँथ पर कनेक जल दैत
किछु कालधरि माथ
हँसौतैत रहैत छलाह।
ई जुड़ाएब आ माथ हँसोतबाक
काज आब हमरा जिम्मा आबि गेल।
बरषक बरष बीत गेल
ओहि जुड़हरक जलकेँ
जे माय कि बाबूजी सँ
भेटल छल माँथपर
जहिया जुड़शीतल होएत छै
भोरे-भोर माय हाथक सिनेह

लेल मन आ माँथ औनाइत
बौआएत किछु काल बेकल
कऽ दैत अछि
आब बुझाएत अछि जुड़ाएब
आ माँथ पर घुरियैत ओ
सिनेहक स्पर्श जे करैत छल
आश्वस्त हम छी ने
जुड़ाएल रहू,
जुग- जुग जीबू। ❑

काँपैत मन

भीतरे भीतर हँफैत मन
बऽर-बेगारता करैत मन।
सूप सन छाती छै मुदा
दैव-दैव गुहारैत मन।
रामकेँ गुहारी हनुमानकेँ गुहारी
पहरे- पहर माएकेँ गुहारैत मन।
कखनहुँ अकाशतऽ कखनहुँ पताल में
उड़ैत पतखा सन उड़ैत बसाती मन।
कतबहु समेटी मुदा समटल नहि होएत अछि
बाँसक करची सन चिराइत-कँप-कँपाइत मन। ❑

सोन सन दिन

कौआ बाजै भेलै भोर
चुप अछि तैयो अपन ठोर।
बढ़ि रहल अछि जिनगीक आश
कटि जेतै अहिना सभ त्रास।
धैरज राखि करी सभ काज
घर मे रहू सम्हारि समाज।
देश-विदेश अछि विपदाग्रस्त
जुनि हौ घर बैठलासँ पस्त।
फेरो हेतै सोन सन दिन
नहि रहतै मनुष फेर दीन। ❑

आश

भिनसर सन नहि लागै आइ
मऽन कहै आब कतै जाय।
कोना कटतै अझुका दिन
भिनसर दुपहर लागै ऋण।
असोथकित छै देह आ जन
एक- दोसराकेँ टोबै मन।
आब की हेतै की करी उपाय
जन जन मे भय पसरल जाय।
माय खेवैया लगौथिन पार
आर के करथिन नैया पार। ❑

करोना काल

तोरे डर डेराएल लोक
घरे-घर नुकायल लोक।
चाऊर दालि तऽ लऽ आनल
मने-मन हेराएल लोक।
नेना भुटका बान्हल अछि
बाट-घाट घेरायल लोक।
राति-दिन सुनसान लगै
गुण-धुन मे सन्हिएल लोक।
एलै कोरोना जहिया सँ
बिपैत सनअँखियासै लोक। ❑

राजनीतिक साँप

लहोछि कैं साँप
उल्टैत अछि
आ डँसऽ चाहैत अछि
ओहि बौसकेँ
जे ओकर नांगड़ि
अथवा देहकेँ
क्षतिग्रस्त करबाक हेतु
प्रयुक्त भेल
ओ नहि देखैत अछि
ओ बौस सजीव अछि वा
लोह -पाथर
ओहि पर मुँह मारव तऽ
अपन दाँत वा मुँह
सुरक्षित रहत वा नहि
राजनीतिक साँप
सेहो पराजयक चोट सँ
लहोछिकेँ तक्षकेक भाव-भरि
बेर -बेर लोह -पाथर पर
फनियर सन मुँह मारबाक
परयास करैत अछि
देखिनिहार देख रहल अछि

सुननिहार सुनि रहल अछि
सभ बुझि रहल अछि!!!! ❑

साँच

साँच-साँच होए छै।
भूत हो वा वर्तमान
नीक हो आकि तीत।
मनक हो कि तनक
परिवारक हो की समाजक
अथवा कौरव वा पाण्डबक
युद्ध युद्धे कहल जेतए।
एहन युद्ध तखने होएत छै
जखन शकुनी सन सार
धृतराष्ट्रक आँखि बनि
हस्तिनापुर कैं नाश
करबाक शप्पथ खा कैं
दुर्योधन सन पुरुष कैं
आत्मीय भऽ जाए छै ! ❑

विधना की करत!

सभ किछ भेटल
भागो सँ अधिक
रखले नहि भेलतऽ
विधना की करत।
पसरल छै जगत मे
आनन्द चारु कात
समटिले नहि भेल तऽ
विधना की करत।
आदैत अछि बिगरल
दिनकेँ राति मानि
सुतिकऽ गमबैत
बिधना की करत।
सोहनगर छल भोर
अहाँ सुतल रहलहुँ
भोर छीजि गेल तऽ
बिधना की करत।
जीलहुँ भरि पोख
लै औरदा खूब नीक
जीबैक नहि लुरि तऽ
बिधना की करत। ❑

करमक बाट

विवश मन
औनाएत अछि
विवश आँखि
नोराएत अछि
करमक बाट पर
चलैत जिनगी
की करवनहुँ रुकलैये
जे रुकतै
सुरुज चान सन तऽ नहि
बनि सकैत छी मुदा
अपन जिनगीक बाट
पर चली
एतबा ध्येय अछि।
संसार नीक कि अधलाह छैक
चलैत छै चलैत रहतै
कुकरमे कि सुकरमे जिनगीयो
चलैत छै चलैत रहतै
हम अपन कर्म आ बिसवासकेँ
किएक छोड़ी
हमरा कर्मण्येधिकारस्य पर
बिसवास अछि। ❑

झुझुआन जिनगी

कखनहुँकें झुझुआन
नहि लगैत अछि जिनगी
जखन नितांत निर्वाक
बैठल अपनहिसँ अपन
अज्ञात खाहिस
पुछऽ लगैत अछि
सवाल पर सवाल
किएक, कथी, कोना,
आ अहाँ कि हम
चुप-चाप हियाबैत
रहैत छी ज़बाब
फेर निरुत्तर भऽ
बैठल रहि जाएत छी
किएक,कथी,कोना
बड़ मारुख होएत अछि
ओ छण, मिनट, कालक लघु अंश डँसैत नहि रहैत
अछि
भीतरे-भीतर ओ भुजंग
कखनहुँ तऽ लगैत अछि
कहीं साँचो छातीक भाथी

रुकि ने जाय कोनो घड़ी
हँसोतऽ लगैत छी छाती
कखनहुँकेँ साँचो लागऽ लगैये
ई जिनगीक झुझुआन क्षण! ❑

शीर्षक

नहि अछि कोनो स्वर्णिम अतीत
अछि नहि कोनो ओहन वर्तमान
अछि तँ मात्र बस वर्त्तमान
वर्त्तमानकेँ छोड़ी तखन
भविष्यक किएक कोनो बात कही।
सदिखन कर्मक बात कही।
भविष्यक कोन तब बात कही
सभ अछि अपन करमक अधीन।
ऊँच नीच जग मे जतेक
सभ जीबि रहल छथि अपन भाग
हमहुँ ओहिमे छी जीबि रहल
नीक बेजाक की बात कही।
चतुर चलैथ लय अपन चालि
तेज चलैथ लय अपन चालि
पैघ चलैथ लय अपन वैभव
हम अपन की बात कही।
सदिखन कर्मेक बात कही।
सोना चानी नहि जाएत संग
गोर नार नहि जाएत अंग
नहि रहतैन किनकहु धरा-धाम
लोक जहानक की बात कही।
सदिखन कर्मेक बात कही। ❑

कतेक पैघ?

कतेक पैघ?
ताड़ो सँ पैघ?
बर, पीपर, नीमो सँ पैघ?
आम, जौम, कटहरो सँ पैघ?
सागर, धरती, नदियो सँ पैघ?
सुरुज, चान, तरेगणों सँ पैघ?
के पैघ, कथीक पैघ?
बिन कोनो मासूल
जुग जुग सँ दाता
अपनहि अपन भाग विधाता
हिनका सभहक ऋणी मनुज कहै हम बड़ पैघ।
छोट बुद्धि आर की बजता
कहौथ ने ओ कतेक पैघ??? ❑

बिहान

उगलै सुरुज
सुतल छी बाबू
जागू भेल बिहान
चिड़य चुनमुन
जगा रहल अछि
आँगन,बाट,बथान ।
बाट-बटोही डेग झारने
चलि पड़ला निज काज
बाम-दहीन चलैत हरवाहा
धेलक जोति सिरौर।
खेतक आरि पर अपने सेहो
पहुँचला कुशल किसान।
आबो तऽ नीन तोड़ू बाबू
जागू भेल बिहान। ❑

वेलेंटाइन

बड़ दूर छलै
प्रेमक बाट
हमर गाम,
शहर,नगर मे
कहाँ जा पेलहुँ
ओहि बाट पर
जाएतो कहाँ छलै
कोइ ओहि बाट दिस
गेना, गुलाबक कमी
कहाँ छल,
अपन बाड़िये मे
हिलसैत छल
बेली,चमेली, गुलदाउदी,
आ रंग बिरंगा गेना, गुलाब
वेलेंटाइन साइत
हमरा सभहक
देविये देवता
छलैथ। ❑

वेलेंटाइन- 2

आइ छलै
गुलाब फूलक दिन
नाति काल्हिए
तोरि लेलक
लाल टरेस
थलकमल सन
पसरल गुलाब
आनन्द सँ लगा लेलक
साइकिलक हेँडल पर
हिलसैत आएल देखबऽ
बाबुजी देखियौ
कते सुन्दर छै फूल
साँचो बड़ सुन्नर छलै
ओ गुलाबक फूल
हमर नैते सन
बिहुँसैत ,खिलखिलैत।
हेप्पी वेलेंटाइन। ❑

चुप छी

हम देखै छी
सुनैत छी
बुझबो करैत छी
किछु कहियो सकैत छी
मुदा अपन उमेर
अपन परिवेश, परिस्थिति
मे ओझराएल,
चुप छी।
आब बुझना जाएत अछि
बुढ़ भेला पर
मनुष साँचों मे
गाछ भऽ जाएत छै।
गाछ जे छाह दै
फल दै
जीवैत रहै
जुरवैत रहै मुदा
अपन जरूरैत लेल
किछु माँगै नहि! ❑

सिनेह

कहाँ छै असान
जिनगीक रस्ता
टेंढ-सोझ चलैत
खियैत जाए छै देह
गत्तर गत्तर बेधैत
दुबरा जाए छै नेह।
कतबो करु ने
उपाय नीक बनबाक
अधलाहीक तगमा
बना दै छै अधलाह
कखनहुँकेँ सिनेहक सेहो
बरषै छै मेह ।
जीवाक छै जिनगी
जोगारो छै जिनगी
सलाहो छै जिनगी
उपकारो छै जिनगी
जिनगीक खेतमे
भरैत रहू सिनेह। ❑

बसंती भोर

भोर भेल
अन्हार गेल
सगरो पसरल
सोन किरिण
सगरो जिनगी करै सोर
आऊ ने नवल वसंत
जगतीकेँ लेलक कोर
सगरो हँसै छै बसंती भोर।
हँसै छै गेना-गुलाब
उड़ै छै सगरो पराग
तितलीक अधर सटल
पीबि रहल पराग
झिहिर झिहिर बहै वात
धरा रंगल ओर-छोर सगरो हँसै...
चिड़ैय केर कलरव मधुर
सुनिकेँ जगै उलास
मंदीरकेर घंटी सँ
निकसै श्रद्धाक भास
आऊ ने हमहुँ सभ
सोहनगर बनाबी भोर।
सगरो हँसै छै बसंती भोर। ❑

लिलसा

सरसतिया जे होएतै
माय बड़का जकती
बकरी आ भैंस नहि चरैतिये
हमहुँ छोटका जकती।
बाउ ने कोदारि आ टाला
से माटि उघितै
गोनैर आ गमछी मे
जाड़े ने जरैतै।
माइयोक देह केहन
ठरल लगैत छै
छातियो में सटला से
देह नै गरमाय छै।
कहुना ई मूरैत जे
माय हमर होइतै
हमहुँ बड़के जकती
पाय खूब कमैतियै।
मायक नुआँ आ
बाबुक कम्मर
चौकी पर चदैर
आ रुइयाक बिछौना
सभटा ने होएतै। ❑

नाक

हमरो होएत छल
नाक होएत बड़का
मान सनोमान सँ
नहाएतौं मुदा खगता?
भने जिबैत छी
अछि ने कोनो खोदका
पाटी गुटबाजी केर
नहि कोनो खगता।
नाक सूत पानि तऽ
नेनहु पियाबैत छै
नाक धरि सगरो
सारोऽ घुमाबै छै
सैर सरहोजि के
जुनि बुझु छोटका
तें हम कहैत छी
नाकक कोन खगता। ❑